

# डॉ. मार्क जेनिंग्स, मार्क, व्याख्यान 16, मरकुस 9:30-10:31, शिष्यत्व, तलाक, बच्चे, धनी शासक

© 2024 मार्क जेनिंग्स और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. मार्क जेनिंग्स द्वारा मार्क के सुसमाचार पर दिए गए उनके उपदेश हैं। यह सत्र 16 है, मार्क 9.30-10.31, शिष्यत्व, तलाक, बच्चे, धनी शासक।

अध्याय 9 में हमने जहाँ छोड़ा था, वहीं से शुरू करते हुए, हम विश्वास और शिष्यत्व की इस समझ को देख रहे हैं।

हम यह भी देख रहे हैं कि कैसे शिष्य यीशु के अनुयायी होने के अर्थ के बारे में पूरी तरह से समझ नहीं पा रहे हैं। वास्तव में, वे अक्सर अपने सांस्कृतिक मानदंडों, अपने स्वयं के गर्व और अपने स्वयं के अहंकार के माध्यम से चीजों को समझते हैं। हमने पिछली बार के अंत में इस पर थोड़ा विचार किया था, बच्चे और सामाजिक स्थिति के बारे में यह शिक्षा और सामाजिक स्थिति का उलटा होना कि मसीह का अनुयायी किसका सम्मान करता है, इस संदर्भ में अलग तरह से सोचता है और जो लोग मसीह का अनुसरण कर रहे हैं, उनके भीतर मूल्यों के ये सामाजिक भेद नहीं होने चाहिए।

मैं इस विचार को उठाना चाहता हूँ क्योंकि मुझे लगता है कि यह भी वही है जो मार्क ने हमें पद 38 में बताया है, इस बातचीत में जो उसने जॉन के साथ इस व्यक्ति के बारे में की है जो दुष्टात्माओं को निकाल रहा है। इसलिए, 9:38 में, जॉन ने उससे कहा, गुरु, हमने एक व्यक्ति को आपके नाम से दुष्टात्माओं को निकालते देखा और हमने उसे रोकने की कोशिश की क्योंकि वह हमारा अनुसरण नहीं कर रहा था। आगे बढ़ने से पहले पद 38 में दिलचस्प बातें हैं।

यह एक बहुत ही दुर्लभ घटना है, जहाँ यह जॉन और यीशु के बीच की बातचीत है, जहाँ जॉन कुछ बात उठाता है। मुझे लगता है कि यह जानना ज़रूरी है कि जॉन इस बारे में बात करता है क्योंकि पहले के एपिसोड में शिष्य इस राक्षस को बाहर निकालने में असमर्थ थे, और यीशु ने कहा कि यह केवल प्रार्थना के माध्यम से ही बाहर आ सकता है, और हमने इस बारे में बात की कि प्रार्थना कैसे विनम्रता और ईश्वर पर निर्भरता का संकेत है। अब, शिष्यों का वह समूह जो उस राक्षस को बाहर नहीं निकाल सका, उसमें जॉन शामिल नहीं था क्योंकि यह पीटर, जेम्स और जॉन थे जो यीशु के साथ थे और रूपांतरण से निकल रहे थे, और वे उन शिष्यों और उस समूह के पास आए।

इसलिए, यूहन्ना उस समूह का हिस्सा नहीं था जो स्पष्ट रूप से परमेश्वर पर पूर्ण निर्भरता की कमी दिखा रहा था और शायद अपनी क्षमता और शक्ति पर अत्यधिक भरोसा कर रहा था। लेकिन यहाँ आयत 38 में हम जानते हैं कि यूहन्ना खुद इन सब में पूरी तरह से शुद्ध नहीं है। इसलिए, यूहन्ना कहता है कि उन्होंने किसी को यीशु के नाम पर दुष्टात्माओं को निकालते देखा और उन्होंने उसे रोकने की कोशिश की।

क्यों? क्योंकि वह हमारा अनुसरण नहीं कर रहा था। ध्यान दें कि भाषा यह नहीं कहती कि वह आपका अनुसरण नहीं कर रहा था। यह है कि वह हमारा अनुसरण नहीं कर रहा था, और मुझे लगता है कि यह महत्वपूर्ण है क्योंकि मुझे लगता है कि यहाँ जो तस्वीर है वह यह है कि ऐसे लोगों का एक समूह है जो किसी तरह शिष्य समूह, इन बारह लोगों के साथ नहीं जुड़ रहे हैं, बल्कि वे अपने आप में एक अलग समूह हैं, अनुयायियों का एक और समूह है और वह आपके नाम पर दुष्टात्माओं को निकाल रहा है। तो, आपको जो पूछना है, उनमें से एक यह है कि क्या यह उन सात बेटों के समान है जिनके बारे में पॉल ने प्रेरितों के काम में बात की है, लेकिन यीशु के जवाब को देखते हुए, मुझे ऐसा नहीं लगता।

उन सात बेटों के साथ क्या होता है जो यीशु के नाम को शक्ति के सूत्र के रूप में इस्तेमाल करने की कोशिश कर रहे हैं, जैसा कि उन्होंने पॉल को करते देखा है, उनके लिए अंत अच्छा नहीं होता। इसमें शैतान जीत जाता है। भूत-प्रेत से ग्रसित व्यक्ति उनके कपड़े उतार देता है, उन्हें पीटता है और उन्हें नंगा करके बाहर भेज देता है।

ऐसा लगता है कि वे दुष्टात्माओं को निकाल रहे हैं, और जॉन की समस्या यह है कि यह आदमी उनमें से एक नहीं है। और जाहिर तौर पर यही समस्या है। विडंबना यह है कि शिष्यों ने एक विशेष दुष्टात्मा को निकालने में असमर्थता दिखाई थी, और यहाँ एक व्यक्ति है जो दुष्टात्मा को निकालने में कुछ हद तक सफल हो रहा है।

लेकिन यीशु ने जवाब दिया, उसे मत रोको। क्योंकि जो कोई मेरे नाम से महान कार्य करता है, वह उसके तुरंत बाद मेरे बारे में बुरा नहीं बोल पाएगा। और इसलिए, यीशु के रोकने के संदर्भ में, वह पुष्टि करता है कि वह व्यक्ति क्या कर रहा है।

उन्होंने कहा कि वास्तव में यह व्यक्ति संभवतः यीशु के बारे में बोलने और यीशु का प्रचार करने के लिए आने वाले मार्ग पर है। और फिर आपके पास श्लोक 40 है, यह कहावत कथन। क्योंकि जो हमारे विरुद्ध नहीं है, वह हमारे लिए है।

यीशु का यह कहना कि आपको अपने लोगों को इस आधार पर नहीं गिनना चाहिए कि वे आपके समूह का हिस्सा हैं या नहीं। यह आदमी जो दुष्टात्माओं को निकाल रहा है, उसने खुद को मेरे साथ जोड़ लिया है। इसलिए, वह हमारे खिलाफ नहीं है।

वह हम में से एक है। क्योंकि मैं तुम से सच कहता हूँ, जो कोई तुम्हें एक प्याला पानी पिलाए, क्योंकि तुम मसीह के हो, वह अपना प्रतिफल किसी रीति से न खोएगा। जो कोई इन छोटों में से जो मुझ पर विश्वास करते हैं, किसी को ठोकर खिलाए, उसके लिये भला होगा कि उसके गले में एक बड़ी चक्की का पाट लटकाया जाए, और वह समुद्र में डाल दिया जाए।

अब मुझे लगता है कि यहाँ 41 और 42 का तर्क यह है कि मसीह का अनुसरण करने वाले लोगों के आपसी संबंधों की प्रतिक्रिया शिक्षा और समर्थन की होनी चाहिए, न कि अस्वीकार की। जो कोई भी तुम्हें पीने के लिए एक प्याला पानी देता है क्योंकि तुम मेरे हो, वह कुछ सही कर रहा है। और इसलिए, सकारात्मक कथन यह है कि वह अपना इनाम नहीं खोएगा।

और यह विचार परमेश्वर के लोगों का हिस्सा होने का आनंद लेने का एक परलोकीय पुरस्कार है। इसका विपरीत है 42. जो कोई भी मुझ पर विश्वास करने वाले छोटे लोगों में से किसी को ठोकर खाने का कारण बनता है, यह बेहतर होगा कि चक्की का पाट डूब जाए।

और मुझे लगता है कि यह विचार बेहतर है कि उन्हें डूबा दिया जाए और समुद्र में फेंक दिया जाए, बजाय इसके कि उन छोटे बच्चों में से किसी एक को ठोकर खाने के कारण न्याय मिले। और इसलिए, इस छोटे बच्चे का विचार, फिर से, इस छोटे बच्चे की स्थिति की भाषा है। ये छोटे बच्चे मासूमों के बारे में नहीं हैं।

यह उन लोगों के बारे में है जो दीन हैं या शायद ऐसे लोग हैं जो ठोकर खाने, किसी तरह के पाप में पड़ने या फटकार पाने के लिए कमज़ोर हैं। शायद यह चिंता इस बात पर है कि विशेष बारह में से एक विशेष तीन में से एक जॉन का किसी के पास जाकर उसे रोकने के लिए कहना क्या प्रभाव डालता है। यहाँ तक कि एक चिंता यह भी है कि ऐसा करने से, आप वास्तव में किसी ऐसे व्यक्ति को रोक रहे हैं जो मसीह की पुष्टि कर रहा है, और हो सकता है कि यह उस व्यक्ति या उसके जैसे किसी व्यक्ति को ठोकर खाने, उनके विश्वास में रुकने का कारण बन रहा हो।

और इसलिए मुझे लगता है कि यह तस्वीर जॉन और इस विचार की भी निंदा करती है कि किसी तरह से उन्हें एक विशेष दर्जा प्राप्त है और वे यह निर्धारित करते हैं कि वास्तव में यीशु के नाम पर कौन काम करने की अनुमति है या नहीं। शैतान के साम्राज्य के खिलाफ इस महान प्रदर्शन और इस भूत भगाने और यीशु के साथ जुड़े इस प्रदर्शन की पुष्टि करने के बजाय कि यह आदमी वही काम कर रहा है जो वे तब कर रहे थे जब वे मंत्रालय में थे, उन्हें इसकी पुष्टि करने के बजाय, ऐसा लगता है कि उन्हें इससे समस्या है। क्योंकि शायद यह उनके अपने सम्मान या महानता की भावना को कुछ हद तक कम कर देता है।

और फिर, इसके बाद, यीशु अतिशयोक्तिपूर्ण उदाहरणों की एक श्रृंखला में प्रवेश करते हैं। यदि तुम्हारा हाथ तुम्हें पाप करने के लिए प्रेरित करता है, तो उसे काट दो। तुम्हारे लिए अपंग होकर जीवन में प्रवेश करना बेहतर है, बजाय इसके कि दो हाथों के साथ नरक, गेहेन्ना, कभी न बुझने वाली आग में जाओ।

यदि तेरा पाँव तुझे पाप में फंसाए, तो उसे काट डाल। तेरे लिए लंगड़ा होकर जीवन में प्रवेश करना, दो पाँव रहते हुए नरक या गेहेन्ना में डाले जाने से बेहतर है। और यदि तेरी आँख तुझे पाप में फंसाए, तो उसे निकाल डाल।

एक आँख के साथ परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना तुम्हारे लिए बेहतर है, बजाय इसके कि दो आँखों के साथ नरक में फेंक दिया जाए जहाँ कीड़ा नहीं मरता और आग नहीं बुझती। और मुझे लगता है कि हमें यह स्पष्ट होना चाहिए कि यीशु जो नहीं कह रहे हैं वह आत्म-क्षति है। यह द्वितीय मंदिर यहूदी धर्म में निषिद्ध कुछ होता।

ये अतिशयोक्तिपूर्ण कथन हैं जहाँ वह कह रहा है कि, और मुझे लगता है कि हाथ, पैर और आँख का उपयोग करके, वह व्यक्ति की संपूर्णता का विचार प्राप्त कर रहा है, एक तरह से यह चित्र कि हाथ कुछ कर रहे हैं। पैर आपको कहीं ले जा रहे हैं।

और आँख नज़र है। और इसलिए, वह तीन तत्वों का उपयोग कर रहा है जो मुझे लगता है कि पूरे व्यक्ति को समझ सकते हैं। यदि आपके अंदर कुछ ऐसा है जो आपको सत्य की खोज करने, इस संदर्भ में अपनी स्थिति की तलाश करने और अपनी महिमा की तलाश करने में योगदान दे रहा है, तो आपको उसे तुरंत हटाने की आवश्यकता है क्योंकि वह गेहेना और नरक का मार्ग है।

और गेहेना वह स्थान है जहाँ इस समय तक द्वितीय मंदिर में यहूदी धर्म ईश्वरीय दंड का प्रतीक बन चुका है। यह वास्तव में यरूशलेम के दक्षिणी भाग में एक घाटी है। पुराने नियम के समय में यह वह स्थान था जहाँ कनानी बलि चढ़ाई जाती थी।

राजा योशियाह ने जो कुछ किया, उसमें से एक यह था कि उसने उस क्षेत्र को अपवित्र कर दिया ताकि उसकी प्रथाओं को रोका जा सके। और इसलिए, यह चलता है, यह एक वास्तविक स्थान को संदर्भित करता है, लेकिन इस समय तक जब आप उस समय अवधि के साहित्य को देखते हैं तो यह भगवान के न्याय का प्रतीक भी है। मेरा मतलब है कि यह एक धार्मिक स्थान से वास्तव में एक कचरा भंडार, एक डंपिंग ग्राउंड, न्याय के इस प्रतीक में बदल जाता है।

और यही बात यीशु कह रहे हैं, जब वे अध्याय 9 के साथ समाप्त करते हैं, तो वे कहते हैं कि अपने आप को खोजने का खतरा यह है कि ईश्वर किस प्रकार की मुद्रा का न्याय करता है। और अध्याय 9 के अंत तक यह पूरा मार्ग शिष्यत्व के इन्हीं तत्वों, प्रार्थना, निर्भरता, यीशु कौन है, इसकी पहचान, मेरे अविश्वास की सहायता, मेरा मानना है कि विनम्रता के संदर्भ, जॉन के विनम्र न होने और किसी और के द्वारा उस समूह द्वारा किए जा रहे काम को स्वीकार न करने पर केंद्रित रहा है। यह सब यीशु के कथन, उनके दूसरे जुनून की भविष्यवाणी से जुड़ा है, जिसके साथ हमने अपनी चर्चा शुरू की, कि मनुष्य के पुत्र को मनुष्यों के हाथों में सौंप दिया जाएगा और वे उसे मार डालेंगे।

और जब तीन दिन बाद उसे मार दिया जाता है, तो वह उठ खड़ा होता है, यह तस्वीर मनुष्य के पुत्र की पीड़ा को दर्शाती है, जिसे परमेश्वर द्वारा मानव हाथों में सौंप दिया जाता है। यह नम्रता और विनम्रता और आज्ञाकारिता और पीड़ा का चित्र है, जो शिष्यत्व है, कुछ ऐसा जिसे शिष्य अभी तक समझ और ग्रहण नहीं कर पाए हैं।

मैं अब अध्याय 9 को छोड़कर आगे बढ़ना चाहता हूँ, वहाँ अंत में कुछ अंश हैं, लेकिन मैं वास्तव में अध्याय 10 में जाना चाहता हूँ और यीशु की कुछ अन्य शिक्षाओं को देखना शुरू करना चाहता हूँ। आप जानते हैं, अध्याय 10, 1-12 में, हम तलाक पर यीशु की शिक्षा के बारे में बात करेंगे। यह यीशु की यहूदिया से यरूशलेम तक की यात्रा पर आधारित है।

पद 1: और वह वहाँ से चला गया और यहूदिया के क्षेत्र में और यरदन के पार चला गया, और भीड़ फिर उसके पास इकट्ठी हो गई। और हमें यहाँ कुछ निर्देश मिल रहे हैं जो उस तरह की बातचीत के समान हैं जो हमने पहले आठ अध्यायों में देखी थी, जहाँ यीशु धर्मगुरुओं के साथ पवित्रशास्त्र की समझ के बारे में बातचीत करने जा रहे हैं। कुछ लोगों ने तर्क दिया है कि यह जगह से बाहर है और मार्क का सुसमाचार वास्तव में पहले आठ अध्यायों में आता है।

हालाँकि, मुझे नहीं लगता कि ऐसा इसलिए है क्योंकि हम जो कुछ देखने जा रहे हैं, उनमें से एक यह है कि यीशु यहाँ सिर्फ तलाक के बारे में बात नहीं कर रहे हैं। वे शिष्यों को इस बारे में शिक्षा भी देते हैं। इसलिए, यह उस पैटर्न से मेल खाता है जिसे हमने अध्याय 8 के बाद देखा है, जो शिष्यों को निर्देश है।

तो, यह सिर्फ एक संघर्ष की कहानी नहीं है, वगैरह। अब, जैसा कि हम इसे पढ़ते हैं, एक बात यह है कि मार्क में तलाक के बारे में यीशु की शिक्षा में अपवाद खंड के रूप में जाना जाने वाला वह खंड नहीं है, जो हमें मैथ्यू में मिलता है। और जब हम इस पर पहुँचेंगे तो मैं इस पर ध्यान दिलाऊँगा।

और कुछ, आप जानते हैं, यह तर्क दिया गया है, क्या मार्क ने अपवाद खंड को हटा दिया है? क्या मैथ्यू ने अपवाद खंड डाला है? या क्या यीशु ने कई अवसरों पर शिक्षा दी है और एक या दूसरे पर अलग-अलग शिक्षा दी है? और मुझे लगता है कि हमारे उद्देश्यों के लिए जब हम इस बारे में सोचते हैं, तो हमें पहचानना चाहिए क्योंकि जब हम तलाक से निपटते हैं, तो तलाक एक वास्तविकता है जिसे हममें से बहुतों ने अनुभव किया है या ऐसे लोगों से जुड़े हैं जिन्होंने इसका अनुभव किया है। और तलाक पर शास्त्र की आवाज़ सिर्फ एक या दो आयतों तक सीमित नहीं है, बल्कि इस पर एक बड़ी शिक्षा है। और मुझे लगता है कि यह शायद सच है, और यहाँ तक कि यीशु ने भी कई जगहों पर तलाक के बारे में शिक्षा दी है।

लेकिन आइए हम यहाँ आयत 1 से 12 में जो कुछ देखते हैं, उसे देखें। वह वहाँ से चला गया और यरदन के पार यहूदिया क्षेत्र में चला गया। भीड़ उसके पास इकट्ठी हुई, और फिर से, जैसा कि उसका रिवाज था, उसने उन्हें सिखाया।

और फरीसी उसे परखने के लिए आए, यानी उसे बदनाम करने का तरीका ढूँढने के लिए, उन्होंने पूछा कि क्या एक आदमी के लिए अपनी पत्नी को तलाक देना वैध है। अब, यह सवाल अपने आप में दिलचस्प है। तो, जिस जगह पर यीशु यहाँ बात कर रहे हैं वह इस क्षेत्र में है, आप जानते हैं, जॉर्डन के उस पार या जॉर्डन के उस पार, शायद यहाँ पारिया, या कहीं भी, हम इस क्षेत्र में हैं जहाँ हम बात कर रहे हैं, हेरोदेस एंटीपस का इस पर कुछ प्रभाव रहा होगा। और इसलिए, हम तलाक और जॉन बैपटिस्ट के इस सवाल के बारे में भी सोच रहे होंगे और वे इसे यहाँ क्यों पूछ रहे हैं।

लेकिन इससे भी ज़्यादा, मैं चाहता हूँ कि हम इस सवाल के बारे में सोचें, क्या किसी पुरुष के लिए अपनी पत्नी को तलाक देना वैध है? मैं इस बात की ओर इसलिए इशारा कर रहा हूँ क्योंकि यह वास्तव में वह सवाल नहीं है जो आम तौर पर पूछा जाता था। दूसरे मंदिर यहूदी धर्म में जिस सवाल पर बहस हुई थी, वह यह नहीं था कि क्या यह वैध है, बल्कि यह था कि किसी पुरुष के लिए अपनी पत्नी को तलाक देना कब वैध है? तो, यह सवाल नहीं था कि क्या कानून तलाक की अनुमति देता है, टोरा, पुराना नियम, लेकिन यह कब इसकी अनुमति देता है? और इसलिए यह सवाल पूछना भी एक जाल की तरह हो सकता है। शायद उन्होंने पहले ही यीशु को तलाक के बारे में शिक्षा देते हुए सुना है, और अब वे ऐसे क्षेत्र में हैं जहाँ वे चाहते हैं कि वे सार्वजनिक रूप से तलाक के खिलाफ बयान दें।

और उसने उनसे कहा, मूसा ने तुम्हें क्या आदेश दिया? अब जब हम मूसा के आदेश को देख रहे हैं, तो ध्यान दें कि यीशु क्या कहते हैं, वह बस इतना कहते हैं, मूसा ने क्या आदेश दिया? वह उन्हें मूसा में बिल्कुल नहीं बताता कि उन्हें कहाँ जाना है। व्यवस्थाविवरण की पुस्तकों में, वह इसे थोड़ा व्यापक छोड़ देता है, लेकिन फरीसी उसे व्यवस्थाविवरण 24 आयत 1-4 का संदर्भ देते हुए समझते हैं। उन्होंने कहा, मूसा ने एक आदमी को तलाक का प्रमाण पत्र लिखने और उसे दूर भेजने की अनुमति दी।

अब, व्यवस्थाविवरण 24 में यह अनुच्छेद बताता है कि मूसा तलाक के बारे में क्या आदेश दे रहा है, जो कहता है कि यदि कोई महिला कुछ ऐसा करती है जो अप्रिय है, वास्तव में, यह हमारे लिए उपयोगी हो सकता है कि हम व्यवस्थाविवरण 24 के संदर्भ के बारे में थोड़ा सोचें। तो, व्यवस्थाविवरण 24, 1-4 वास्तव में जल्दी से।

जब कोई व्यक्ति किसी पत्नी को ले लेता है और उससे विवाह करता है, यदि वह उसे पसंद नहीं करती, क्योंकि उसे उसमें कुछ अभद्रता मिली है, तो वह उसके लिए तलाक का प्रमाणपत्र लिखकर उसके हाथ में दे देता है, और उसे अपने घर से निकाल देता है, और वह उसके घर से चली जाती है, और यदि वह किसी दूसरे व्यक्ति की पत्नी बन जाती है, और वह व्यक्ति उससे घृणा करता है और उसके लिए तलाक का प्रमाणपत्र लिखकर उसके हाथ में दे देता है और उसे अपने घर से निकाल देता है, या यदि वह व्यक्ति मर जाता है जिसने उसे अपनी पत्नी बनाया था, तो उसका पूर्व पति जिसने उसे भेजा था, उसे अपवित्र होने के बाद फिर से अपनी पत्नी नहीं बना सकता, क्योंकि यह यहोवा के सामने घृणित है, और तुम उस देश में नहीं भेजे जाओगे जिसे यहोवा तुम्हारे परमेश्वर ने तुम्हें विरासत के रूप में दिया है। इसलिए, हम इसे यहाँ दो चीजों के रूप में बताने जा रहे हैं। द्वितीय मंदिर यहूदी धर्म में बहस के मुख्य भागों में से एक यह निर्धारित करने का प्रयास करना था कि अभद्रता क्या थी।

अगर किसी पुरुष को महिला में कुछ अभद्रता दिखती है और वह उसे तलाक का प्रमाणपत्र लिख देता है, तो विचार यह था कि अगर उसे किसी तरह की अभद्रता दिखती है तो वह उसे तलाक का प्रमाणपत्र लिख सकता है। खैर, सवाल यह था कि अभद्र क्या है? अगर हम मिशनाह को देखें, जहाँ हम इस तरह की कुछ बहस देखते हैं, शम्माई का स्कूल, जो एक खास रब्बी था, ने कहा कि अभद्रता का मतलब केवल अनैतिकता है, जबकि हिलेल के स्कूल में अभद्रता के बारे में अधिक उदार दृष्टिकोण था, जहाँ अभद्रता को खाना बनाते समय किसी व्यंजन को खराब करने तक भी बढ़ाया जा सकता था, जिसे पति उस संबंध में अभद्रता निर्धारित करता था। तो, बहस यह थी कि तलाक का प्रमाणपत्र लिखना कब कानूनी है, कब यह वैध है, और कब कुछ अभद्र है। लेकिन मुझे उम्मीद है कि आपने 24, 1-4 के संदर्भ को पढ़ते हुए सुना होगा, ध्यान दें कि वह संदर्भ कितना खास था।

यह तलाक पर कोई सामान्य शिक्षा नहीं थी; यह वास्तव में इस बारे में शिक्षा थी कि कब पुनर्विवाह निषिद्ध है। इसलिए, जब अभद्रता के कारण तलाक होता है, और फिर वह महिला किसी दूसरे पुरुष से शादी कर लेती है, और फिर वह विवाह समाप्त हो जाता है, चाहे तलाक से या मृत्यु से, पहले पति को अपनी पत्नी को वापस लेने की अनुमति नहीं होती। और मुझे लगता है

कि इसका अर्थ यह है कि पहले पुरुष को किसी तरह से लाभ या मुनाफा कमाने की अनुमति नहीं है, उसका उस महिला पर अब कोई दावा नहीं है, पहले पति का अब अपनी पत्नी पर कोई दावा नहीं है, जहाँ उससे उसकी पत्नी के रूप में वापस लौटने की उम्मीद की जाती है।

वास्तव में, व्यवस्थाविवरण में कानून के पूरे संदर्भ में सुरक्षात्मक उपाय किए गए हैं, ताकि पापपूर्ण कार्यों से होने वाले नुकसान को कम किया जा सके या कम किया जा सके। मैं यह निर्धारित करने का प्रयास कर रहा हूँ कि कब कोई चीज़ उचित है और कब नहीं। इसलिए, उदाहरण के लिए, यदि मैं व्यवस्थाविवरण 23:24, श्लोक 24 को देख रहा हूँ, तो यह हमारे पाठ से ठीक पहले है।

यदि तुम अपने पड़ोसी के अंगूर के बगीचे में जाओ, तो तुम जितने चाहो उतने अंगूर खा सकते हो, लेकिन तुम अपने थैले में कोई अंगूर नहीं डाल सकते। यदि तुम अपने पड़ोसी के खड़े अनाज के बगीचे में जाओ, तो तुम अपने हाथ से बालियाँ तोड़ सकते हो, लेकिन तुम अपने पड़ोसी के खड़े अनाज पर दरांती नहीं लगा सकते। इसलिए, वे संदर्भ भी चोरी के विचार से संबंधित हैं।

चोरी क्या है और चोरी क्या नहीं है? खैर, अगर आप भूख के कारण कुछ अंगूर ले लेते हैं और आपका पड़ोसी आपसे उस पर चोरी का आरोप नहीं लगा सकता तो यह चोरी नहीं है। और इसलिए, वाचा के रिश्ते में किसी की भूख से कुछ छीनने का प्रलोभन चोरी नहीं माना जाता। लेकिन अगर आप इसे अपने बैग में रखना शुरू कर देते हैं, जिसका मतलब है कि बाद में मदद करना, अगर आप चाहें तो कटाई शुरू कर देते हैं।

यह चोरी है। और इसलिए, यह उपाय, कानून का यह पूरा उपाय, और जब यह चोरी है, जब यह चोरी नहीं है, तो क्या कोई व्यक्ति जो इस स्थिति में तलाकशुदा है, वह दोबारा शादी नहीं कर सकता या दोबारा शादी नहीं कर सकता, वहाँ क्या हो रहा है? पूरा संदर्भ पाप क्या है और क्या नहीं है, इसे नियंत्रित करने और परिभाषित करने का एक विधायी तरीका है, चोरी की पुष्टि नहीं करना बल्कि यह कहने का प्रयास करना कि क्या चोरी है, क्या चोरी नहीं है, तलाक की पुष्टि नहीं करना, बल्कि उस स्थिति में पुरुषों द्वारा पत्नी का उपयोग किए जाने से सुरक्षा को व्यवहार में लाना। और इसलिए, मुझे लगता है कि कम से कम 24 के संदर्भ के बारे में सोचना दिलचस्प है, कि 24 का संदर्भ इस्राएलियों को परमेश्वर के साथ वाचा में और एक दूसरे के साथ वाचा में होने की वास्तविकता के माध्यम से नेविगेट करने में मदद कर रहा है, लेकिन फिर भी पाप और पाप और बुराई की उपस्थिति है।

लेकिन वे उस पर चले जाते हैं। वे बस इतना कहते हैं, इसे एक तथ्य के रूप में लें, कि मूसा ने तलाक के प्रमाण पत्र की अनुमति दी थी। और फिर यीशु जवाब देते हैं, तुम्हारे दिल की कठोरता के कारण, फिर से, अब उन लोगों को ढूँढते हुए जिनसे मूसा बात कर रहा है और फरीसियों को एक साथ, उसने तुम्हें यह आज्ञा लिखी।

तो, यहाँ पर फटकार, अगर आप चाहें, या सुधार यह है कि वे शास्त्र के उस हिस्से पर जा रहे हैं जो लगभग रियायत के रूप में, हृदय की कठोरता के कारण दिया गया था। वे कुछ ऐसा देख रहे

हैं कि मार्ग का वह हिस्सा मौजूद होने का कारण यह है कि लोग परमेश्वर के निर्देश का विरोध कर रहे हैं। और यह उस स्थिति को कम करने में मदद करने के लिए है।

लेकिन सृष्टि की शुरुआत से ही, यीशु आगे कहते हैं, परमेश्वर ने उन्हें नर और नारी बनाया। ध्यान दें कि वह अभी भी मूसा में है। यह संदर्भ अभी भी मूसा से है।

और इसलिए जब वह पूछता है, मूसा क्या कहता है, तो आलोचना का एक हिस्सा यह है कि वे मूसा द्वारा लिखी गई सभी बातों पर विचार नहीं कर रहे हैं। वे तलाक के बारे में मूसा द्वारा कही गई बातों पर विचार कर रहे हैं, लेकिन विवाह के बारे में मूसा द्वारा कही गई बातों पर विचार नहीं कर रहे हैं। सृष्टि के आरंभ से ही, परमेश्वर ने उन्हें नर और मादा बनाया है।

इसलिए हम यहाँ उत्पत्ति 1 और 2 को लागू होते हुए देख रहे हैं। इसलिए, एक आदमी अपने पिता और माँ को छोड़ देगा और अपनी पत्नी से जुड़ा रहेगा, और वे दोनों एक तन हो जाएँगे ताकि वे अब दो न रहें बल्कि एक तन हों। लेकिन इसलिए, परमेश्वर ने एक साथ जोड़ा है; मनुष्य को अलग न होने दें।

और इसलिए, तलाक के लिए वैधानिक है या नहीं, इस सवाल पर यीशु ने जो कहा, वह यह है कि, चलिए सबसे पहले इस बात पर विचार करना शुरू करते हैं कि विवाह क्यों किया जाता है। और विवाह, नर और मादा का मिलन, ईश्वर की सृष्टि की रचना का हिस्सा है। उसने मानवता को दो होने के लिए बनाया जो एक हो जाते हैं।

उसने नर और नर नहीं, मादा और मादा नहीं, यहां तक कि किसी तरह का नर, मादा, नर, मादा भी नहीं बनाया, बल्कि दो अलग-अलग बनाए। सिर्फ अलग होने के लिए नहीं, बल्कि इसलिए कि दो अलग-अलग एक शरीर बन सकें। विवाह का वह डिज़ाइन नर और मादा बनाने के परमेश्वर के डिज़ाइन के ताने-बाने में बुना हुआ है।

वास्तव में, इस एकता के साथ, इसलिए, एक आदमी अपने पिता और माँ को छोड़ देगा और अपनी पत्नी को मजबूती से पकड़ लेगा; तब विवाह का विचार माता और पिता की पारिवारिक इकाई से पति और पत्नी की नई पारिवारिक इकाई की ओर प्रस्थान है। और इसलिए, यहां तक कि पूरी डिजाइन छोड़ने और फिर जुड़ने की है। और इसलिए, जब वह तलाक के इस सवाल के बारे में बात कर रहा है, तो जो चीजें बनने जा रही हैं उनमें से एक है पुरुष और महिला, पिता और माँ के महत्व पर ध्यान देना। यह जोड़ी जारी है, लेकिन इस जोड़ी को अब ऑन्टोलॉजिकल रूप से एक माना जाता है।

वे एक शरीर बन जाते हैं। अब उन्हें एक शरीर, एक इकाई माना जाता है। यह तलाक को लगभग एक अंग-विच्छेदन के रूप में दर्शाता है, अगर आप चाहें, क्योंकि उन्हें दो अलग-अलग शरीर एक साथ नहीं माना जाता है, अब उन्हें एक शरीर माना जाता है।

और फिर जो भगवान ने जोड़ा है, यानी नर और मादा का मिलन, मनुष्य को तलाक के स्थानों को अलग नहीं करना चाहिए, इस विरोधाभासी रिश्ते के भीतर तलाक का प्रमाण पत्र देना एक मानवीय पदनाम था, कि ये दोनों अब अलग हैं। श्लोक 9 का निहितार्थ यह है कि मानवता, मनुष्य



को अधिकार के संदर्भ में भगवान द्वारा जोड़े गए को अलग करने का अधिकार नहीं है। अब, यहाँ कहीं भी अपवाद खंड नहीं है।

पोर्निया के अपवाद के साथ यह है, जिसे तलाक के लिए एक छूट के रूप में डाला गया है। और इसलिए यहाँ मुझे लगता है कि मार्क जो बताने की कोशिश कर रहा है वह तलाक पर यीशु की पूरी शिक्षा नहीं है, पोर्निया यौन अनैतिकता है। वह जो देने की कोशिश कर रहा है वह फरीसी दिल की कठोरता से ग्रसित हैं अपवाद रियायत और इसका क्या मतलब है, और भगवान द्वारा मूल इरादे के साथ नहीं, जो कि हमने मार्क के सुसमाचार में देखा है जहाँ फरीसी और धार्मिक नेताओं पर मानवीय परंपराओं और मानवीय विचारों के लिए भगवान की इच्छा को अलग रखने का आरोप लगाया जा रहा है।

अब, यह सिर्फ यहीं खत्म नहीं होता क्योंकि हम इस भाग में हैं जहाँ शिष्यों को ज़्यादा जानकारी मिल रही है। मैं इस अंश को समाप्त करूँगा। और घर में, फिर से एकांत में, शिष्यों ने फिर से उससे इस मामले के बारे में पूछा।

और उसने उनसे कहा, जो कोई अपनी पत्नी को तलाक देता है, बिना किसी अपवाद के, और दूसरी से विवाह करता है, वह उसके विरुद्ध व्यभिचार करता है। और यदि वह अपने पति को तलाक देती है और दूसरे से विवाह करती है, तो वह व्यभिचार करती है। और इसलिए हमें यह आगे का कथन मिला है जहाँ वे पूछ रहे हैं कि यीशु का वास्तव में क्या मतलब है, और वह जो बताता है वह यह है कि सिर्फ इसलिए कि तलाक का लिखित मानव प्रमाण पत्र जारी किया जा सकता है इसका मतलब यह नहीं है कि भगवान ने उस विवाह को अब तलाक के रूप में मान्यता दी है।

और यहीं पर मैथ्यू के सुसमाचार में अपवाद खंड आता है। और इसका निहितार्थ यह है कि वे अभी भी विवाहित हैं और मानवीय दृष्टिकोण से तलाक की अनुमति ईश्वर के दृष्टिकोण से व्यभिचार के रूप में सामने आती है। यह दिलचस्प है कि महिला को भी इसमें प्रस्तुत किया गया है, जिसका संदर्भ यहाँ हेरोदेस एंटीपस और हेरोदियास और हेरोदेस फिलिप से उसके अलगाव से हो सकता है।

मैं तलाक पर इस भाग को समाप्त करना चाहता हूँ। यहाँ जो बातें कही जा रही हैं, उनमें से एक बात पर ध्यान दें, मुझे लगता है, वह है उन पापों का ढेर जिन्हें धार्मिक नेतृत्व ने अपनी मानवीय परंपराओं के आधार पर करने की अनुमति दी है। हम पहले ही देख चुके हैं कि उन्होंने कुछ कॉर्बन घोषित करके माता और पिता का सम्मान करने के मोहभंग की अनुमति दी।

तो, यह उस आज्ञा का हिस्सा है जिसकी अनुमति उनकी व्यवस्था ने दी है। हमने पहले ही देखा है कि सब्त के दिन धार्मिक नेतृत्व ने यीशु को मारने की इच्छा से सब्त का उल्लंघन किया, जो सब्त के दिन वैध है। हमने देखा है कि उन पर वास्तव में सब्त के दिन का उपयोग ईश्वरीय इरादे के बजाय मानवीय इरादे को बढ़ावा देने के लिए करने का आरोप लगाया गया है।

और यहाँ मुझे लगता है कि इसका अर्थ यह है कि वे व्यभिचार की अनुमति भी दे रहे हैं क्योंकि वे तलाक की मानवीय परंपरा से अधिक चिंतित हैं। यहाँ तक कि इस बात पर बहस करना कि क्या

कोई व्यक्ति किसी ऐसे व्यक्ति को तलाक दे सकता है जो अश्लीलता नहीं है, जो यौन अनैतिकता नहीं है। इसलिए, यौन अनैतिकता नहीं होने पर तलाक की अनुमति देने से पक्षों को ऐसा व्यवहार करने की अनुमति मिलती है जैसे कि वे अब एक-दूसरे से विवाहित नहीं हैं, जबकि वे अभी भी, एक दिव्य दृष्टिकोण से, एक-दूसरे से विवाहित हैं।

और इसलिए, हम देख रहे हैं कि यहाँ धार्मिक नेतृत्व ने किस तरह से ऐसी व्यवस्थाएँ बनाई हैं जो दशवचन के उल्लंघन की अनुमति देती हैं। और हम इसे जारी रखते हुए देखते हैं। और मुझे लगता है कि यही यीशु है, और मार्क चाहते हैं कि हम इकट्ठा हों।

ठीक है, यहाँ आगे बढ़ते हुए, मार्क अध्याय 10 में आगे बढ़ते हुए, यहाँ अब आयत 13 से 16 को देखें। और यहाँ हमारे पास शिष्यत्व के बारे में यीशु का कथन है क्योंकि यह एक बच्चे या बच्चे जैसी मुद्रा या विश्वास से संबंधित है। यह दिलचस्प है, हमने अभी पतियों और पत्नियों और पिताओं और माताओं के बारे में बात की है, और अब हम बच्चों के बारे में बात करते हैं।

तो, हम स्पष्ट रूप से एक घरेलू रूपक के भीतर काम कर रहे हैं, लेकिन मैं चाहता हूँ कि हम याद रखें कि सामाजिक स्थिति से बच्चे कैसे होते हैं क्योंकि मुझे लगता है कि यह महत्वपूर्ण है। और वे बच्चों को उसके पास ला रहे थे ताकि वह उन्हें छू सके, और शिष्यों ने उन्हें डांटा। और जब यीशु ने यह देखा, तो वह क्रोधित हुआ और उनसे कहा, बच्चों को मेरे पास आने दो, उन्हें मत रोको, क्योंकि परमेश्वर का राज्य ऐसों का है।

मैं तुमसे सच कहता हूँ, जो कोई परमेश्वर के राज्य को बच्चे की तरह स्वीकार नहीं करता, वह उसमें प्रवेश नहीं करेगा। और उसने उन्हें अपनी बाहों में लिया और उन पर अपना हाथ रखकर उन्हें आशीर्वाद दिया। जब हम इस सेटअप को देखते हैं तो यह दिलचस्प लगता है।

तो, यहाँ फिर से, हमारे पास शिष्यों का यह रुख है कि वे लोगों को बच्चों को यीशु के पास ले जाने की अनुमति देने से मना कर रहे हैं। और यह बात वाकई बहुत कठोर लग सकती है, खासकर जब हम बच्चों के बारे में सोचते हैं, फिर से, मासूम बच्चे जो क्रिसमस के समय सांता की गोद में बैठना चाहते हैं, बस खुशी के पुलिंदे। खैर, प्राचीन दुनिया में, बच्चों की सामाजिक स्थिति इतनी कम रही होगी कि बच्चों का यीशु जैसे व्यक्ति के साथ बाहर आना एक तरह से असंगत लगता होगा।

और इसलिए शिष्य जो कर रहे हैं वह यह है कि वे खुद को इस बात के लिए पूर्व-योग्य घोषित कर रहे हैं कि यीशु की उपस्थिति में आने के लिए कौन सही सामाजिक स्थिति रखता है। और बच्चे उस पर खरे नहीं उतरते। वे अपनी पूर्व-योग्यता को पूरा नहीं करते।

और अगर हम समझते हैं कि मार्क बच्चों को कैसे पेश कर रहा है, वह हमें कैसे समझाना चाहता है कि सामाजिक स्थिति के मामले में, यीशु क्रोधित हो जाता है, इसलिए नहीं कि वह निर्दोष लोगों को आने की अनुमति नहीं दे रहा है, बल्कि इसलिए कि वे निम्न सामाजिक स्थिति वाले लोगों को आने की अनुमति नहीं दे रहे हैं, कि वे निर्णय ले रहे हैं कि यीशु की उपस्थिति में कौन होना चाहिए। और याद रखें, यह वही आलोचना है जो धार्मिक नेताओं ने यीशु की की थी जब वह कर

संग्रहकर्ताओं और पापियों के साथ भोजन कर रहा था। वे कह रहे थे कि उसे उन लोगों के साथ भोजन नहीं करना चाहिए जो शर्मनाक हैं।

यहाँ शिष्य लगभग यही काम अलग तरीके से कर रहे हैं: यह निर्धारित करना कि यीशु के लिए कौन सही है और कौन नहीं। यह यीशु की शिष्यों के साथ लगातार बातचीत से उपजा है कि वे भीड़ और फरीसियों के कितने करीब हैं। उनके चारों ओर एक कठोरता है जो उन्हें बताती है कि उन्हें सावधान रहने की जरूरत है, फरीसियों के खमीर से सावधान रहने की।

यह इस बात का उदाहरण है कि वे ठीक यही काम कैसे कर रहे हैं। और इसलिए, इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि यीशु क्रोधित हैं। मरकुस यीशु की मानवीय भावनाओं को बहुत अच्छी तरह से व्यक्त करता है, और यहाँ हमारे पास इसका एक अच्छा उदाहरण है।

बच्चों को मेरे पास आने दो। उन्हें मत रोको, क्योंकि परमेश्वर का राज्य ऐसे ही लोगों का है। और मुझे नहीं लगता कि यह किसी भी रूप, तरीके या रूप में धर्मांतरण की उम्र या अपनेपन की उम्र या शिशु बपतिस्मा की बात कर रहा है।

मुझे नहीं लगता कि इस अंश में इनमें से किसी पर चर्चा की जा रही है। बल्कि यह उन लोगों के लिए है, जो बीमार हैं, बहिष्कृत हैं, वंचित हैं, धन्य हैं गरीब, जैसा कि ल्यूक ने उठाया है, उनके लिए परमेश्वर का राज्य है। और फिर श्लोक 15 का कथन, अंग्रेजी में, एक स्ट्रिंग है, आप वास्तव में इसे ग्रीक में देखते हैं, जहां यह कहता है, सच में मैं तुमसे कहता हूँ, जिसका उपयोग यीशु अक्सर एक बहुत ही दृढ़ कथन को पेश करने के लिए करेंगे।

और फिर जो कोई परमेश्वर के राज्य को बच्चे की तरह स्वीकार नहीं करता, वह उसमें प्रवेश नहीं करेगा। जिस वाक्यांश का उपयोग किया गया है, वह ग्रीक में कथनों को जोर देने के लिए संरचना करने का एक तरीका है। और यहाँ एक विशेष संरचना है जिसका उपयोग यहाँ किया गया है, जहाँ सबसे कठिन जोर दिया जा सकता है।

यहाँ एक वाक्य है जो लगभग इस प्रकार है, जो कोई भी परमेश्वर के राज्य को एक बच्चे की तरह स्वीकार नहीं करता है, वह किसी भी तरह से उसमें प्रवेश नहीं कर सकता। आप में से जिन्होंने ग्रीक का अध्ययन किया है, उनके लिए क्रिया में एक ऊ और एक मे है और साथ ही एक उपवाक्य है। और यही वह जोर है जो यहाँ दिया जा रहा है।

तो, यह एक बहुत ही सशक्त कथन है। और मुझे नहीं लगता कि वह जो कह रहा है, वह यह है कि जो कोई भी उस मासूम बच्चे जैसी आस्था के साथ नहीं आता है। बल्कि यह है कि जो कोई भी प्रभु को समझकर नहीं आता है, मेरा मानना है, मेरे अविश्वास की सहायता करें।

कौन है जो अपनी हैसियत का दिखावा किए बिना नहीं आता? यीशु के पास यह कहते हुए आना कि मैं कोई हूँ, एक ऐसा विश्वास है जो अपर्याप्त और अयोग्य है। यह केवल वही है जो एक बच्चे की तरह आता है जो यह जानते हुए आता है कि वे निम्न और कमज़ोर हैं और ईश्वर पर निर्भर हैं।

बच्चों जैसा विश्वास कोई मासूम विश्वास नहीं है, बल्कि यह एक विनम्र विश्वास है, अगर आप चाहें तो। सीरोफिनीशियन महिला को याद करें। उसने यह बात तब समझी जब उसने कहा, यहां तक कि कुत्ते भी बच्चों से टुकड़े खाते हैं।

और यीशु ने उसके कथन की पुष्टि की। विश्वास की पुष्टि हमेशा यीशु के पास आने, यीशु पर निर्भरता की पुष्टि होती है, न कि उनके अपने मूल्य की घोषणा। जिसमें शिष्य अध्याय 9 से लेकर अध्याय 10 तक असफल रहे।

वे अपने मूल्य की पुष्टि कर रहे हैं। कि उन्होंने मूल्य, सामाजिक मूल्य, स्थिति मूल्य और यीशु के आस-पास होने के मामले में खुद और इन बच्चों के बीच अंतर देखा। इसलिए, यह शिष्यों के लिए कभी-कभी एक कठिन शिक्षण पद्धति है जिसे अक्सर पहचाना जाता है।

यहाँ पर देखते हुए, बस परिचय देते हुए, हम मार्क अध्याय 10, 10-17 से 31 के बाकी हिस्सों पर चर्चा करेंगे। जब हम अपने अगले भाग में जाएँगे, तो हमें इनमें से कुछ को उठाना होगा, लेकिन मैं इसे शुरू करना चाहूँगा। जब वह अपनी यात्रा पर निकल रहा था, तो एक आदमी दौड़कर आया और उसके सामने घुटने टेककर उससे पूछा, अच्छे गुरु, मुझे अनंत जीवन पाने के लिए क्या करना चाहिए? यह एक दिलचस्प सवाल है।

यहाँ, हमारे पास यीशु की तलाश करने वाले इस अमीर आदमी की कहानी है। दिलचस्प सवाल यह है कि अनंत जीवन पाने के लिए मुझे क्या करना चाहिए? अक्सर जब हम करने और विरासत पाने के बारे में सोचते हैं, तो ये पूरी तरह से अलग-अलग वास्तविकताएँ होती हैं। आप विरासत इसलिए पाते हैं क्योंकि आप पैदा हुए थे, इसलिए नहीं कि आपने कुछ किया।

मुझे लगता है कि आप अपनी विरासत खोने के लिए कुछ कर सकते हैं। लेकिन यह थोड़ा सा विचार है। इस अवधारणा में, इस्राएल को विरासत प्राप्त करने के लिए चुना गया था।

दूसरे मंदिर यहूदी धर्म ने अनुग्रह को समझा। इसने इस्राएल के चयन में अनुग्रह को समझा। यह विचार कि यहूदियों को धार्मिकता की केवल कर्मों की समझ थी, वास्तव में पूरी तरह से सही नहीं है।

वे समझते थे कि इस्राएल को एक राष्ट्र के रूप में इस विरासत और अनन्त जीवन की विरासत को प्राप्त करने के लिए चुना गया था, यह अब्राहम को दिए गए वादों का मिश्रण है और यहाँ तक कि मूसा और वादा किए गए देश और दाऊद के राज्य तक भी विस्तारित होगा। इसमें युगांतिक सिद्धान्त का विचार है। इसलिए, वह इस पूरी तस्वीर के बारे में बात कर रहे हैं।

लेकिन जब यह विचार नहीं था कि आपको अंदर आने का अधिकार अर्जित करना है, तो वहाँ यह विचार था कि अंदर रहने के लिए कुछ करने और आज्ञापालन करने की आवश्यकता है। इससे व्यक्ति को अंदर रहने के अधिकार से वंचित किया जा सकता था। अगर कोई कानून का उल्लंघन करता है तो उसे बाहर निकाला जा सकता है और लोगों से बहिष्कृत किया जा सकता है।

तो, मुझे लगता है कि सवाल यह है कि मुझे यह दिखाने के लिए क्या करना चाहिए कि मैं उस समूह का हिस्सा हूँ जिसे ईश्वर द्वारा अंतिम समय में आशीर्वाद दिया जाएगा? तो, समूह को विरासत मिलेगी। मुझे उस समूह का हिस्सा बनने के लिए क्या करना चाहिए? यह दिलचस्प है। यहाँ इस बात का कोई संकेत नहीं है कि वह यीशु की परीक्षा लेने आ रहा है, कि वह उसे फँसाने आ रहा है।

यह फरीसियों की बात नहीं है। यह जिस तरह से होता है, यह एक वास्तविक प्रश्न है। यीशु जवाब देते हैं, तुम मुझे अच्छा क्यों कहते हो? कोई भी अच्छा नहीं है सिवाय केवल परमेश्वर के।

यह विचार एक बहुत ही रोचक नाटक है, जहाँ शायद वह यहाँ भागे हुए युवक की चापलूसी पर हमला कर रहा है। शायद वह विडंबना, तनाव की भावना पैदा करना चाहता है, कि उसे अच्छा कहना वास्तव में सही है और यही वह है जो वह प्राप्त करना चाहता है कि आदमी यह स्वीकार करे कि आप उसी तरह अच्छे हैं जिस तरह से भगवान अच्छे हैं। इसके बावजूद, आदमी निडर है, और वह वहीं रहता है।

इसलिए, यीशु आगे कहते हैं, केवल परमेश्वर के अलावा कोई भी अच्छा नहीं है। आप आज्ञाओं को जानते हैं, और वह उनमें से कई को सूचीबद्ध करना शुरू करता है, हालाँकि सभी नहीं। हत्या मत करो।

व्यभिचार मत करो। चोरी मत करो। झूठी गवाही मत दो।

धोखा मत दो। अपनी माँ और पिता का आदर करो। दिलचस्प बात यह है कि यीशु यहाँ दस वचनों के दूसरे भाग का उल्लेख कर रहे हैं।

वे तत्व मानवता के बीच की अंतःक्रियाएँ हैं। एक बात जिसका उन्होंने जिक्र नहीं किया, वह है कि आपको लालच नहीं करना चाहिए। मुझे लगता है कि लालच का जिक्र न करना उनमें से एक है जहाँ चुप्पी वास्तव में उनके कहे से ज़्यादा ज़ोरदार है।

लेकिन वह एब्सिंथ में भी, डेकालॉग का पहला भाग है, जो ईश्वर के प्रति समर्पण से संबंधित है। इसलिए, जब वह आज्ञाओं का हवाला देता है, तो वह उन आज्ञाओं को चुप छोड़ देता है जो ईश्वर के सम्मान के साथ-साथ लालच पर ध्यान केंद्रित करती हैं और अन्य आज्ञाओं से बात करती हैं, जिनके बारे में आदमी जवाब देता है कि उसने अपनी युवावस्था से ही उन्हें रखा है। और यीशु ने कहा, उसे देखते हुए, उससे प्यार किया जैसे कि यह वह संदर्भ नहीं है जो उसने धार्मिक नेताओं के लिए किया था, उससे प्यार किया और कहा, तुममें एक चीज की कमी है।

जाओ, जो कुछ तुम्हारे पास है उसे बेचकर गरीबों को दे दो और तुम्हें स्वर्ग में खजाना मिलेगा। और आओ, मेरे पीछे आओ। ध्यान दें कि आओ, मेरे पीछे आओ, यह वही भाषा है जिसका इस्तेमाल उन्होंने शिष्यत्व के आह्वान के लिए किया है।

इसके अलावा कोई और भाषा नहीं है। साथ ही, ध्यान दें कि यीशु यह नहीं कहते कि जाओ, जो कुछ तुम्हारे पास है उसे बेच दो; इसे मेरी सेवकाई में दान कर दो। यीशु को इससे कोई लाभ नहीं मिल रहा है।

इसलिए, अब आदमी के पास इसे बेचने और शायद इससे आर्थिक रूप से योगदान देकर लाभ कमाने का कोई अवसर नहीं है। उसे इसे गरीबों को देना है। फिर से, समाज के निम्न दर्जे के लोगों को।

उसके पास धन है, उनके पास नहीं है और उसे खुद को भी दोषमुक्त करना है। और साथ ही, यह कोई ऐसा आदेश नहीं है जो यीशु हर किसी को देता है। और इसलिए, जब हम इसे देखते हैं, तो सवाल यह उठता है कि यीशु कहते हैं, तुम्हारे पास एक चीज़ की कमी है।

उस आदमी ने अभी-अभी कहा था कि उसने सारी आज्ञाएँ मान ली हैं, लेकिन उसने उससे कहा कि उसमें एक चीज़ की कमी है। उसने उसे आज्ञा दी कि उसे क्या करना चाहिए: तुम्हें ये काम करने चाहिए। यह बात सुनकर वह निराश हो गया और दुखी होकर चला गया, क्योंकि उसके पास बहुत सारी संपत्ति थी।

और इस प्रकार, हम यीशु द्वारा दी गई आज्ञाओं पर वापस आते हैं। और इसलिए, उन्होंने इसका उल्लेख नहीं किया। उन्होंने अन्य देवताओं को न मानने की आज्ञाओं का उल्लेख नहीं किया।

उसने लालच की आज्ञाओं का जिक्र नहीं किया। आज्ञाओं के होने से पहले, मुझे लगता है कि यह बात उठाई जा रही है कि यह आदमी दस आज्ञाओं का पालन नहीं कर रहा था। परमेश्वर के प्रति आज्ञाकारी होने की अपनी इच्छा को व्यक्त करने के लिए, उसका मतलब था कि वह वही करे जो यीशु ने कहा था।

अगर वह वास्तव में परमेश्वर का आज्ञाकारी था, तो वह जानना चाहता था कि अनंत जीवन पाने के लिए उसे क्या करना चाहिए, उसे यीशु की कही हुई बातों का पालन करना चाहिए। और यीशु ने उससे कहा कि वह जाकर बेच दे, अपने लालच और धन की इच्छा से खुद को अलग कर ले। और वह आदमी ऐसा नहीं कर सका।

यह बहुत दुखद कहानी है क्योंकि उसके पास बहुत सारा धन था और यीशु उससे प्यार करते थे, लेकिन वह उस धन को त्याग नहीं सकता था। और फिर, इस कथन से निराश होकर वह चला गया। यीशु ने चारों ओर देखा और अपने शिष्य से कहा, जिनके पास धन है उनके लिए परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना कितना कठिन होगा।

यीशु के ये शब्द सुनकर शिष्य आश्चर्यचकित हो गए। लेकिन यीशु ने उनसे फिर कहा, "हे बच्चों, परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना कितना कठिन है। परमेश्वर के राज्य में धनवान व्यक्ति के प्रवेश करने से ऊँट का सूई के छेद में से निकल जाना अधिक आसान है।"

और वे बहुत आश्चर्यचकित होकर उससे बोले, फिर कौन बचाया जा सकता है? और यहाँ तक कि इस प्रश्न में कि कौन बचाया जा सकता है, और हम इसे यहीं समाप्त करेंगे, शिष्य शायद निराश हैं

क्योंकि उनके सम्मान और स्थिति की भावना में, जिस व्यक्ति के पास धन है, जो प्रतीत होता है कि वह भक्त भी है, उसकी स्थिति ऐसी होगी जहाँ धन को ईश्वर द्वारा दिया गया आशीर्वाद माना जाएगा। और यदि आवश्यकता है कि जिनके पास धन है वे धन को अलग कर दें, धन के महत्व को अलग कर दें, और इसे सब कुछ देने के लिए तैयार रहें, तो शिष्यों के लिए, यह असंभव जैसा लगता है। ऐसा कुछ जिसे वे स्वयं भी करने में असमर्थ होंगे।

वे यहाँ ऐसे लोग हैं जिन्होंने सब कुछ छोड़ दिया है, फिर भी वे बुझ गए हैं, यीशु की माँगों से चकित हैं। हम इस कहानी को खत्म करते समय इसे उठाएँगे, ऊँट की कहावत के बारे में बात करेंगे, और फिर अगली बार अध्याय 10 और 11 के बाकी हिस्सों पर आगे बढ़ेंगे। धन्यवाद।

यह डॉ. मार्क जेनिंग्स द्वारा मार्क के सुसमाचार पर दिए गए उपदेश हैं। यह सत्र 16 है, मार्क 9.30-10.31, शिष्यत्व, तलाक, बच्चे, अमीर शासक।